मधुमक्खियों की प्रमुख प्रजातियां

भारतीय उपमहाद्वीप में मधुमक्खियों की चार प्रमुख प्रजातियां पाई जाती हैं। भारतीय व पाश्चात्य मधुमक्खी पालतू हैं जिनको आधुनिक लकड़ी के डिब्बों में पालते हैं तथा पहाड़ी व छोटी मधुमक्खी जंगली हैं जिनको लकड़ी के डिब्बों में पालना सम्भव नहीं है। स्वभाव के अनुसार मधुमक्खियों को दो भागों में बांटा जा सकता है:-

अ. पालतू मधुमक्खी

1. भारतीय मधुमक्खी (एपिस सिराना)- इसे मधुकर मौन, सरगा, माँहु, खैरा या मौना के नाम से जाना जाता है। यह जाति पूरे भारतवर्ष में पाई जाती है परन्तु पहाड़ी इलाकों के लिए यह अधिक उचित पाई गई है। पहाड़ी इलाकों में पाये जाने वाले कर्मठ आकार में मैदानी क्षेत्र के कर्मठ से बड़े होते हैं। हरियाणा प्रदेश में यह उत्तरी भाग में पाली जाती है। इस जाति की मधुमक्खियों का बर्ताव व स्वभाव पाश्चात्य जाति की मधुमक्खियों से मिलता जुलता है। ये अंधेरे स्थानों जैसे कि पेड़ों व दीवारों के खोखलों तथा चट्टानों की दरारों में 4-5 से लेकर 10-11 समानान्तर छत्ते बनाती हैं। छत्तों में ऊपर शहद, बीच में पराग व नीचे शिशुओं का पालन किया जाता है। यह आकार में पाश्चात्य मधुमक्खियों से छोटी, परन्तु छोटी मधुमक्खी से बड़ी होती है। इस मधुमक्खी में पाश्चात्य मधुमक्खी से अधिक वकछूट व घरछूट की प्रवृति होती है। यह मौन छत्ता गोंद एकत्र नहीं करती व इसमें मोमी पतंगे का आक्रमण अधिक होता है। युगों से इस मौन को परम्परागत मौन गृहों में रखा जाता है। लेकिन अब लकड़ी की बनी आधुनिक मौन पेटिकाओं में इसका पालन किया जाता है। इसकी मौन पेटिका आकार में पाश्चात्य मौनपेटिका से छोटी होती है। इस मौन से लगभग 8-10 कि.ग्रा. शहद प्रति वंश प्रतिवर्ष प्राप्त किया जा सकता है।

1. पहाड़ी/सारंग मधुमक्खी (एपिस डोर्सेटा)

2. छोटी मधुमक्खी (ऐपिस फलोरिया)

3. भारतीय मधुमक्खी (एपिस सिराना)

4. यूरोपियन/पाश्चात्य मधुमक्खी (एपिस मैलिफेरा)

2. यूरोपियन / पाश्चात्य मधमुक्खी (एपिस मैलिफेरा)- - इस इटैलियन मधमुक्खी भी कहते हैं इस जाति की मधुमक्खियों को भारत में पाश्चात्य देशों से 1960 के दशक में लाया गया था। इस जाति की मधुमक्खियां पहाड़ी जाति की मधुमक्खियों से छोटी तथा अन्य दो जातियों की मधुमक्खियों से बड़ी होती हैं। ये मधुमक्खियां स्वभाव में शांत व अधिक मेहनती होती हैं। इनमें घरछूट की प्रवृति केवल नाम मात्र है व छत्ता गोंद एकत्र करती हैं। भारतीय मौन की तरह यह जाति भी अंधेरे में रहना पसन्द करती है तथा कई

समानान्तर छत्ते बनाती है। यह जाति भारतीय मौन की अपेक्षा अधिक गर्म जलवायु सहन कर सकती है। भारतीय मौन की अपेक्षा इस जाति में बीमारियों का प्रकोप भी बहुत कम है। हरियाणा व आसपास के राज्यों में इसी मधुमक्खी का पालन किया जाता है। इसका एक वंश साल भर में 25-30 कि.ग्रा. शहद देता है यदि इस जाति की मधुमक्खियों को समय-समय पर अच्छे मौनचरों वाले क्षेत्रों में स्थानान्तरण किया जाए तो इससे 30-40 कि.ग्रा. शहद प्रति वंश प्रतिवर्ष प्राप्त किया जा सकता है।

ब. जंगली मधुमक्खी

1. पहाड़ी/सारंग मधुमक्खी एपिस डोर्सेटा- भारत में इसे डूमना, भौंरा, सारंग, जंगली माहल एवं चट्टानी माहल नामों से पुकारते हैं। यह देश के लगभग समस्त मैदानी इलाकों एवं समुन्दरतल से 1,600 मीटर तक की ऊंचाई वाले पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती है। यह मधुमक्खी इकहरा छत्ते बनाती है जो लगभग 1.0 से 3.0 मीटर तक लंबा तथा 0.5 से 1.0 मीटर चौड़ा हो सकता है। यह अपना छत्ते सूर्य की सीधी किरणों एवं बरसात से बचाते हुए ऊंचे पेड़ों की डाली, चट्टान की खोखल, पानी की टंकियों अथवा गैर रिहायशी पड़े मकान की छत के नीचे काफी ऊंचाई पर बनाती है। यह मधुमक्खी घने जंगलों में कभी-2 एक पेड़ पर ही 50 से 100 कालोनी तक बना लेती है मधुमक्खियां गर्मियों में मैदानी इलाकों से पहाड़ी क्षेत्रों में चली जाती हैं जहां से सर्दी शुरू होने से पूर्व मैदानी इलाकों में वापिस आ जाती हैं।

यह आकार में सबसे बड़ी तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। किसी कारणवश छेड़े जाने से आक्रमण प्राणघातक भी हो सकता है क्योंकि ये झुण्ड बनाकर हमला करती हैं व मीलों तक पीछा करती हैं। इस जाति के एक वंश में कमेरी मधुमक्खियों की संख्या 70-80 हजार तक हो सकती है जो 5-8 कि.मी. की दूरी तक से फूलों का रस व पराग लेकर आती हैं और परागण क्रिया में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भोजन की कमी तथा अधिक तापमान जैसी प्रतिकूल परिस्थितियां होने पर यह प्रजाति छत्ते छोड़कर भाग जाती है। हरियाणा में इस जाति के वंश पूरे साल रहते हैं, लेकिन अक्टूबर से मई तक ये काफी संख्या में होते हैं। यह मौन सबसे अधिक शहद इकट्ठा करती है व एक छत्ते से 40-80 कि.ग्रा. तक शहद मिल सकता है। हमारे देश में कुल उत्पादन का 60-70 प्रतिशत शहद तथा 80 प्रतिशत मोम इसी जाति से प्राप्त होता है। इसका मोम विशेष गुण वाला होता है जो घेड़ा मोम के नाम से जाना जाता है ।

2. छोटी मधुमक्खी; ऐपिस फलोरिया - इस मौन को लटकनिया, भस्माखी, मौदा तथा लड्डू मधुमक्खी के नाम से भी जाना जाता है। इस मधुमक्खी का आकार अन्य सभी जातियों से छोटा होता है। एक स्थान पर न रूकने के कारण इसको भी आधुनिक ढंग से नहीं पाला जा सकता। प्रायः इसके छत्ते उजाले में झाड़ियों, छोटे पेड़ों तथा बाड़ों की पतली डालियों पर पाये जाते हैं। ये मधुमक्खियां इकहरा छत्ते पेड़ की टहनी को छत्तों के बीच में लेकर बनाती हैं। छत्तों का आकार 50 ग 35 ग 2.5 सैं.मी. से अधिक नहीं होता। स्वभाव में यह मधुमक्खी सारंग मौन की अपेक्षा बहुत ही भोली है। यह बहुत कम डंक मारती है। यह मधुमक्खी भी सारंग मौन की तरह स्थान परिवर्तन करती रहती है। एक स्थान पर प्रायः 5-6 महीने से अधिक नहीं ठहरती है। इसकी शहद पैदा करने की क्षमता भी बहुत कम (400-900 ग्रा. प्रति छत्ता) है। इसलिए इसे व्यापारिक स्तर पर आधुनिक तरीके से बक्सों में पालने के प्रयास भी अधिक नहीं किए गए हैं। इस मधुमक्खी की शहद पैदा करने की क्षमता कम है परन्तु यह भारत तथा पाकिस्तान के मैदानी इलाकों की फसलों में परागण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह जाति अपने छत्तों के ऊपरी हिस्से में शहद इकट्ठा करती है। इसलिए जब इसका शहद तोड़ा जाता है तो बाकि छत्ता भी टहनी से अलग हो जाता है। यह जाति अन्य जातियों की अपेक्षा छोटे आकार के फूलों पर अधिक जाती है। छोटे आकार के बहुत से फूल, जड़ी बूटियों में होते हैं और इसलिए औषधि रूप में इसके शहद को दूसरी जातियों के शहद से अधिक महत्वपूर्ण समझा जाता है।